- Note- थॉमस हॉब्स निरंकुश संप्रभुता की स्थापना के बाद भी कुछ परिस्थितियों में लोगों को राजा की आज्ञा की अवहेलना करने का अधिकार देता है, यदि राजा व्यक्ति को अपने-आपको मारने, घायल करने, आक्रमणकर्ता का विरोध न करने, वायु, औषधि, जीवन दाता किसी वस्तु का प्रयोग न करने की आज्ञा देता है, तो प्रजा ऐसी आज्ञा की अवहेलना कर सकती है, क्योंकि लोगों ने राज्य की स्थापना ही **'जीवन की सुरक्षा'** के लिए की थी| अर्थात **थॉमस हॉब्स जीवन रक्षा के प्राकृतिक अधिकार को राजा के विरुद्ध सुरक्षित रखता है| थॉमस हॉब्स** कहता है कि "जब मेरे ऊपर बल का प्रयोग हो तब मैं अपनी रक्षा के लिए बल प्रयोग न करूं ऐसा प्रतिज्ञापत्र सदैव निरर्थक होगा|"

- **थॉमस हॉब्स के अनुसार** "राज्य का उद्देश्य व्यक्तियों के व्यक्तिगत हितों का योग मात्र है, इसके अतिरिक्त उसका कोई सामूहिक लक्ष्य नहीं है|" अर्थात **राज्य एक साधन** है|
- **थॉमस हॉब्स** "संप्रभु के प्रति नागरिकों की भक्ति तब तक है और केवल उस सीमा तक है जब तक कि संप्रभु उन्हें शक्ति द्वारा सुरक्षा प्रदान करने में समर्थ है|"

हॉब्स के प्रभुसत्ता (संप्रभुता) संबंधी विचार-

- **डी सीवे रचना** में हॉब्स **डोमिनियन या सार्वभौम सत्ता** की बात करता है| सार्वभौम सत्ता होने के नाते लेवियाथन कानून का एकमात्र स्रोत और व्याख्याकार है|
- हॉब्स की प्रभुसत्ता का आधार- 'सामाजिक समझौता/ संविदा' है|
- हॉब्स की प्रभुसत्ता **पूर्ण, अविभाज्य, असीमित, निरकुंश, निरपेक्ष, स्थायी, अदेय** है| इस संबंध में **सेबाइन का कथन है कि** "थॉमस हॉब्स ने संप्रभुता को उन अयोग्यताओं से पूर्णतया मुक्त कर दिया, जिन्हें बोदाँ ने आवश्यक रूप से बनाए रखा था|"
- **लॉस्की** "हॉब्स अद्वैतवाद का सम्राट है|"
- **प्रभुसत्ता का आदेश ही कानून** है| प्रभुसत्ता **न्यायसम्मत व कानून सम्मत** है| इस प्रकार थॉमस हॉब्स **वैधानिक संप्रभुता का समर्थक** है|
- प्रभुसत्ता **व्यक्ति के कार्यों व विचारों** दोनों में **हस्तक्षेप** कर सकती है|
- संप्रभु को सर्वसाधारण पर **असीमित अधिकार** प्राप्त हैं|
- संप्रभु **कानून का निर्माता व व्याख्याकार** दोनों है|
- संप्रभु **संपत्ति का सृजनहार** है, अतः संप्रभुता को संपत्ति के नियमन का भी अधिकार है|
- **सब अधिकारियों की सत्ता का मूल स्रोत** भी संप्रभु है|

- **समस्त विधायी, कार्यपालिका, न्यायपालिका** शक्ति संप्रभु में निहित है|
- संप्रभु के अधिकार **अपरिवर्तनीय, अहस्तनांतरणीय और अविभाज्य** हैं |

- **थॉमस हॉब्स संप्रभुता के दो प्रकार बताता है**-
    1. **स्थापित संप्रभुता**- सभी लोग अपनी इच्छा से अपने समस्त अधिकार किसी को सौंपते हैं, तो स्थापित संप्रभुता होती है| थॉमस हॉब्स का कॉमनवेल्थ स्थापित संप्रभुता पर आधारित है|
    2. **अर्जित संप्रभुता**- जब लोग मृत्यु या बंधन के भय से किसी को अधिकार देते हैं, तो वह अर्जित संप्रभुता होती है|

  अपवाद- आत्मरक्षा के उद्देश्य से प्रजा राजाज्ञा की अवहेलना कर सकती है|

- **गैटल** "हॉब्स के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा लेखक नहीं हुआ है, जिसने प्रभुसत्ता के बारे में इतना अतिवादी दृष्टिकोण अपनाया हो"
- **क्लेरेंडन** "इस प्रकार की युक्तियों से राजतंत्र का समर्थन करने वाला हॉब्स यदि उत्पन्न ही ना होता तो अच्छा था|"
- **वाहन** "हॉब्स ही ऐसा दार्शनिक है, जिसने सर्वप्रथम इस बात का अनुभव किया कि राज्य के एक पूर्ण-सिद्धांत में मूल विचार संप्रभुता का है, उसने ही संप्रभुता के स्थान, कार्यों और सीमाओं को निश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया|"

शासन प्रणालियों का वर्गीकरण-

- **प्रभुसत्ता के निवास स्थान के आधार** पर हॉब्स ने शासन प्रणालियों का वर्गीकरण किया है-
    1. **राजतंत्र-** जहां प्रभुसत्ता एक व्यक्ति में निहित हो|
    2. **कुलीनतंत्र**- जहां प्रभुसत्ता कुछ लोगों में निहित हो|
    3. **लोकतंत्र-** जहां प्रभुसत्ता सब लोगों में निहित हो|

- हॉब्स के अनुसार मिश्रित या सीमित शासन प्रणाली नहीं हो सकती, क्योंकि संप्रभुता अविभाज्य है|

- **हॉब्स राजतंत्र को श्रेष्ठ मानता है| कारण**-